ISSN 2278-8808 SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित शैक्षिक विचारों का अध्ययन

रतनलाल भोजक, Ph. D. (शोध निर्देशक) & वन्दना सोनी (शोधार्थी)

प्रोफेसर – बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.), सरदारशहर

पीएच. डी. शोधकर्त्री – आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय, गाँ. वि. मं., सरदारशहर

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

१. प्रस्तावना :–

भारतीय दर्शन की महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं का साकार रूप महाकवि कालिदास के कुमारसम्भव महाकाव्य में व्यावहारिक रूप से देखा जा सकता है। भोगवाद एवं भौतिकवाद के त्रिशूल से ग्रस्त शिक्षित व्यक्ति को यह महाकाव्य अपनी शिक्षाओं के द्वारा मार्ग दिखा कर मानव का कल्याण कर सकता है। इस महाकाव्य को पढ़ने से जो बातें लक्ष्य में नहीं आती, स्पष्ट समझ रखी जाये तो व्यक्ति उस ज्ञान को प्राप्त कर अपने जीवन का विकास करने लगता है।

कुमारसम्भव महाकाव्य के अनुसार ज्ञान कहीं बाहर से नहीं आता वह व्यक्ति के भीतर ही छिपा रहता है। यदि मनुष्य के हृदय के आवरण को हटा दिया जाए तो मनुष्य को सब प्रकार का भौतिक तथा अधिभौतिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। ज्ञान की अनुभूति के लिए ध्यान को केन्द्रित करना अति आवश्यक है। मन के केन्द्रीकरण द्वारा ही वास्तव में शिक्षा की प्राप्ति होती है। इस महाकाव्य की शिक्षा मनुष्य के चिंतन व मनन पर बल देकर उसे प्रेरणा प्रदान करती है। आज हमें इस महाकाव्य की शिक्षा को आदर्श रूप में रखकर शिक्षा का परिमार्जन कर उसे राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

छात्र एवं शिक्षक को कर्तव्य का मार्ग दिखाने के लिए आवश्यक है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्राचीन संस्कृति के महत्व का उद्घोष करने वाले कुमारसम्भव महाकाव्य जैसे ग्रन्थ सम्मिलित किये जाये। कुमारसम्भव महाकाव्य के शैक्षिक विचारों को आत्मसात करने के लिए महाकवि कालिदास ने इस बात पर बल दिया है कि उसे केवल धार्मिक पुस्तक की तरह पढ़कर रहने से ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। कुमारसम्भव के माध्यम से महाकवि कालिदास ने जो संदेश दिया है, उसके केन्द्रीय भाव को समझ कर वास्तविक अर्थ को प्रकाश में लाने के लिए कुमारसम्भव महाकाव्य की शिक्षा अपरिहार्य है।

२. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-

कुमारसम्भव महाकाव्य को पढ़कर इसका अनुसरण तो आरम्भ से किया जाता रहा है, पर इसमें दिए गए ज्ञान व शिक्षा के आदर्शों का अनुसरण करने का प्रयास नहीं किया गया है। इस महाकाव्य की शिक्षाएँ हमारा मार्गदर्शन कर हमारे मनोभावों को संतुलित करती है। इस महाकाव्य के ज्ञान को प्रकाश में लाने की आवश्यकता इसलिए भी अनुभव की गई है कि मनुष्य का जीवन उद्देश्यपूर्ण और उपयोगी तभी बन सकता है जब हम कुमारसम्भव महाकाव्य के व्यावहारिक पक्ष को समझें। यह महाकाव्य जीवन का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जिससे हमें यथार्थ का सिद्धान्त प्राप्त होता है। इस महाकाव्य के अध्ययन की आवश्यकता पर ध्यान इसीलिए भी आकृष्ट हो जाता है क्योंकि इस क्षेत्र में हुए शोधकार्य की संख्या अति न्यून है।

कालिदास द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं आदर्शो की व्याख्या कर समाज के सामने प्रस्तुत करने की महती आवश्यकता है। शिक्षक एवं छात्र जो शिक्षा की धुरी और राष्ट्र निर्माता है, वे अपना कर्त्तव्य पालन सही दिशा में करें तो हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सफल हो सकते हैं, इनमें कर्तव्य बोध की यह भावना इस महाकाव्य के माध्यम से जाग्रत की जा सकती है। शिक्षा के स्वरूप पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि शिक्षक व छात्र दिग्भ्रंमित होकर शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति करने में असफल है, ऐसी स्थिति में कालिदास द्वारा इस महाकाव्य में दिखाये गये आदर्शो को प्रस्तुत कर मार्ग दिखाने का प्रयास किया जायेगा।
महाकवि कालिदास हमारे राष्ट्रीय कवि तथा भारतीय संस्कृति के प्रमुख परिपोषक थे। भारत की संस्कृति महाकवि कालिदास महाकाव्यवाणी में बोलती है और इनके नाटकों में अपना मनोरम रूप दिखाकर मानवमात्र के हृदय का मनोरंजन करती है। कालिदास ने अपने महाकाव्य चमत्कार से समस्त संसार में ख्याति प्राप्त की है।

कुमारसम्भव महाकाव्य में मंजिल से अधिक मार्ग का महत्त्व है। यह महाकाव्य ये जानता है कि सामान्य व्यक्ति निर्बल होता है और अनेक समस्याओं ये घिरा होता है। इस महाकाव्य से अपेक्षा नहीं करते कि ऐसा व्यक्ति कोई असाधारण करिश्मा कर दिखाएगा। इसके उपदेश मनौवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक है, जो जीवन पद्धति के रूप में अपनाए जा सकते है। इस संसार में जो लोग अच्छे होते हैं तो वे मन के इतने दुर्बल होते हैं कि अपमान सहकर भी संघर्ष करने से डरते है और दुष्टता से या तो दूर भाग जाते हैं या फिर समझौता कर लेते हैं।

३. अध्ययन का औचित्य :-

कुमारसम्भव महाकाव्य को शिक्षा का अंग बनाकर उससे मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि यह महाकाव्य हमें बताता है कि शिक्षा वह है जो सही शैक्षिक विचारों से अनुप्राणित होती तथा विद्यार्थी में ऐसे दृष्टिकोण आस्था व संकल्प को विकसित करती

है जिससे वह अपने जीवन व्यवहार को उचित विचारों की कसौटी पर रखता हुआ मानव कल्याण करता रहे।

जहाँ एक ओर मानव आज विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त कर २१ वीं सदी का मानव कहलाने का गर्व करने लगा, वहीं दूसरी और मानव के विचार, आदर्श और कार्य इतने कुत्सित और भंयकर होते जा रहे है कि सम्पूर्ण मानव जाति के नष्ट और पतित होने का भय पैदा हो गया है। वर्तमान भौतिक युग में शिक्षा, छात्र, अभिभावक और अध्यापक सभी का स्वरूप बदल गया है। आज अशान्ति और भय का वातावरण निर्मित हो रहा है। उसके उतरदायित्व से वर्तमान भौतिकवाद बच नही सकता, चाहे वह मानव जाति के कल्याण की कितनी ही बाते क्यों न कर ले। उसके द्वारा मनुष्य में अपने अन्दर की पाश्विक प्रवृतियों का जितना विकास किया, उतना ही मनुष्य के अन्दर के देवत्व का हनन भी हो गया है, आज हम अपने विकास की सही दिशा से विमुख है। अतः जिस समाज में हम रहते है, उसे सही मार्ग की राह दिखाना हमारा परम कर्तव्य है। आज का मानव यह समझने की भूल कर बैठा है कि वैज्ञानिक उन्नति जीवन का चरमोत्कर्ष है, जबकि हम दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करते है तो देखते है कि यह केवल जीवन का एक पहलू है। जीवन का एक अन्य पक्ष आध्यात्मिक भी है, दोनो के सामंजस्य से ही जीवन का समुचित विकास हो सकता है। व्यक्ति की इस भूल को सुधार कर उसे सही राह की ओर अग्रसर करने का प्रयास प्रस्तुत शोध के औचित्य को दर्शाता है। अतः वर्तमान परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में इस महाकाव्य के आदर्श का व्यावहारिक रूप और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इन महाकाव्य का उद्देश्य शिक्षा के पतन की गर्त में जा रहे मानव को शिक्षा के सही स्वरूप का बोध कराकर उसमें उचित मूल्यों का निरूपण करके शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य अर्थात् व्यक्तित्व का विकास करना है।

५. अध्ययन के उद्देश्य : -

१. कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित गुरू-शिष्य के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
२. कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित अनुशासन का अध्ययन करना।
३. कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
४. कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
५. कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित गुरू-व्यक्तित्व का अध्ययन।

६. प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शोध विधि : -

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संग्रह में तथ्यों के संग्रह हेतु विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में विषय-वस्तु से सम्बन्धित तथ्यों एवं सूचनाओं का चयन संदर्भ पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, संस्मरणों आदि में लिखित विवरणों का विश्लेषण करने के पश्चात् किया गया है। शोध प्रक्रिया की दृष्टि से दार्शनिक, विवरणात्मक एवं

विवेचनात्मक विषयों पर किये जाने वाले अध्ययन में विधि सर्वथा उपयुक्त तर्कसंगत एवं उतम मानी जाती है। शोध प्रकृति के अनुसार अध्यायों के शीर्षक अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निर्मित किये गये है। और उनसे सम्बन्धित सम्प्रत्यय एवं तथ्यों का संग्रह किया गया है।

७. उपयोगिता :-

१. इस शोध के अध्ययन से वर्तमान में जो गुरू-शिष्यों के संबंधों में जो घनिष्ठता का अभाव है। उसे सुधारा जा सकता है।

२. प्रस्तुत शोध के माध्यम से वर्तमान समय में शिक्षा जगत् में व्याप्त अनुशासनहीनता को समाप्त कर शिष्य को अनुशासन के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

३. वर्तमान समय में बाल-केन्द्रित पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। इस अध्ययन के माध्यम से पाठ्यक्रम में और कौन-कौन सी श्रेष्ठ विधायें सम्मिलित की जा सकती है। उनका अध्ययन कर पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

४. प्रस्तुत शोध में शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत कौन-कौन सी विधियाँ प्रभावपूर्ण है, इसका अध्ययन किया गया है। वर्तमान समय में भी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अनेक विधियों/प्रविधियों का प्रयोग शिक्षण में किया जाता है।

५. प्रस्तुत शोध के अध्ययन से गुरू के व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। क्योंकि गुरू का प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व ही किसी न किसी रूप में शिक्षण को प्रभावी बनाता है।

८. निष्कर्ष :-

किसी भी शोध कार्य की सार्थकता तभी सिद्ध होती हैं, जब उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष समाजोपयोगी तथा शिक्षा को नई दिशा प्रदान करने में सक्षम हो। प्रस्तुत शोध कार्य से निम्नलिखित बिन्दु निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुए है-

- इस शोध के अध्ययन से वर्तमान में जो गुरू-शिष्यों के संबंधों में जो घनिष्ठता का अभाव है। उसे सुधारा जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध के माध्यम से वर्तमान समय में शिक्षा जगत् में व्याप्त अनुशासनहीनता को समाप्त कर शिष्य को अनुशासन के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- वर्तमान समय में बाल-केन्द्रित पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। इस अध्ययन के माध्यम से पाठ्यक्रम में और कौन-कौन सी श्रेष्ठ विधायें सम्मिलित की जा सकती है। उनका अध्ययन कर पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत कौन-कौन सी विधियाँ प्रभावपूर्ण है, इसका अध्ययन किया गया है। वर्तमान समय में भी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अनेक विधियों/प्रविधियों का प्रयोग शिक्षण में किया जाता है।

- प्रस्तुत शोध के अध्ययन से गुरू के व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। क्योंकि गुरू का प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व ही किसी न किसी रूप में शिक्षण को प्रभावी बनाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

त्रिपाठी, कृष्णमणि ''रघुवंशमहाकाव्यम्'' चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
हीरा, डॉ. राजवंश सहाय (१९७६) ''संस्कृत साहित्य कोष'' चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी।
गुप्ता, डॉ. गोकुलदास ''पंचतंत्रम्'' चौखम्बा संस्कृत संस्थान
कवडेकर, डॉ. प्रभाकर नारायण ''संस्कृत साहित्य में नीति कथा का उद्गम व विकास''
द्विवेदी, डॉ. दया ''नीतिमंजरी''
शास्त्री, डॉ. रामस्वरूप ''आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश''